राहुल कुमार
शोधार्थी वीर कुंवर सिंह
विश्वविद्यालय, आरा,
बिहार, भारत

नासिरा शर्मा और स्त्री विमर्श

राहुल कुमार

सारांश
स्त्री विमर्श पर अलेकॉन स्त्री लेखिकाओं ने उपन्यास, कहानी के माध्यम से अपना विचार और समस्यात्मक हस्तिकोण को व्यक्त किया है। नासिरा शर्मा उन्हीं में एक प्रसिद्ध उपन्यास लेखिका है। जिन्होंने अपने उपन्यास शालमली, ठीकरे की व्रण, शब्द प्रक्षेप, बहिष्ट जहरा और 'पारिजात' के माध्यम से नारी की वेदना, संघर्ष और पुरुषवादी मानसिकता से मुक्ति की बात कही है। नासिरा जी ने प्रत्येक उपन्यास में नारी की आत्मविश्वासी और संघर्षीत छवि का वर्णन किया है। 'शालमली' उपन्यास की नायका शालमली जागरूक और अपने अधिकार को प्राप्त करने की प्राकृतिक इच्छा वाली नारी हैं।

कूटशब्द: नासिरा शर्मा, स्त्री विमर्श, उपन्यास

प्रस्तावना
नासिरा शर्मा ने ‘स्त्री-विमर्श’ पर अपने उपन्यासों में स्त्री पात्रों के माध्यम से बहुत कुछ कहा है। स्त्रियों की पीड़ा, कुंठा और तिरस्कार को स्त्री पात्र के माध्यम से उजागर किया गया है। हमारे देश में स्त्री अबला है, कह देने से बात स्पष्ट नहीं हो जाती है लेकिन अपने स्पष्टवादी हस्तित्व से जांच-परखकर स्त्री की दशा और मानसिकता का वर्णन नहीं करते, तो नारी की सही व्याख्या नहीं हो पाती है। यह नारी की नारीत्व सुलभ गुण से स्पष्ट हो पाता है। नारी घर संभालने वाली है, या नारी पुरुषों के कन्ठे से कन्ठे मिलाकर चलने वाली है। नारी सरकारी कार्यालयों में काम करने वाली है नारी सड़को पर काम करने वाली है, या ईट बहटो पर काम करने वाली है। ऐसा कोई कार्य नहीं है, जो नारी ना करती हो। नारी की अनेकरूपता की सूची बहुत बड़ी है।

स्त्री के कई रूपों को लेकर जिसमें उसके पीड़ा, संतात्र और कुंठा को खत्म कर उसके जीवन में स्वतंत्रता, उत्साह और उमंग को भरने की कोशिश भी
नासिरा जी करती है। नासिरा जी का अधिकांश भाग शहरों में बीता है, पर वह गाँव की मिट्टी को बखुबी पहचानती है। ग्रामीण स्त्री के स्वभाव और गुण को अच्छी तरह पहचानती है। स्त्रियों के अन्दर की क़ुँआ और अनकलापन को भी बड़े ही मनोवैज्ञानिक तरीके से उजागर करती है। इसी बात यह है कि अपनी सारी प्रशंसाओं में वे इंसान की तकलीफ़ों को व्यक्त करती है। स्त्री शक्ति का रूप है। सृष्टि के विकास क्रम में उसका महत्व पूर्ण रहता है। वह सामा, सम्पन्नता, ममता, करुणा, शस्त्र, वास्तव, लघु और दया की प्रतिभा है। उन्हें गुरू के कारण उसे देवी कहा जाता है। स्त्री चिन्तन आज विश्व चिन्तन की बहस है, इसलिए कि उसे कहीं हिन्दू स्त्रियों का दमन, अन्याय एवं अत्याचार से मुक्ति की सोच निहित है।

‘शालमली उपन्यास नासिरा शर्मा का प्रसिद्ध उपन्यास है। शादी के बाद शालमली के जीवन में एक ही ध्वनि गुज़रती है कि नरेश पति है और वह पति स्वामी और दासी का संबंध शालमली और नरेश के बीच एक मजबूत दीवार का रूप धारण करने लगी थी। नरेश हमेशा यह कहता था कि ‘तुम ठहरी, एक आधुनिक विचार की महिला’ स्वतंत्र, व्यवहार में उन्मुक्त, तुषार संस्कार हस्ताक्षर अलग थे। नरेश का यह वाक्य सुनने-सुनने शालमली को आधुनिक शब्द से घुटने लगी थी। शालमली इस साथ दूसरे जीवन संघटन में छूट पड़ी थी। शालमली उपन्यास में नरेश का एक अलग और नया रूप उभरता है, शालमली इसमें परंपरागत नायिका नहीं है, वलंक वह अपनी मौजूदगी और शालमली की अलग-अलग सत्ता को अधुनिक शब्द से घुटने लगी थी। शालमली सामने दूसरे जीवन संघटन में छूट पड़ी थी।

शालमली उपन्यास में नरेश का एक अलग और नया रूप उभरता है, शालमली इसमें परंपरागत नायिका नहीं है, वलंक वह अपनी मौजूदगी और शालमली की अलग-अलग सत्ता को अधुनिक शब्द से घुटने लगी थी। शालमली सामने दूसरे जीवन संघटन में छूट पड़ी थी।
महरूख की दास्तान के माध्यम से दो खिडकियाँ खुलती हैं जिसमें एक गाँव है, वहाँ का स्कूल है, गाँव के असहाय लोग हैं, जिनके दुःखों से वह परेशान हो उठती है। दूसरी तरफ परम्परागत टकराव है। इन दोनों ही परिवेशों से गुजरते हुए ‘महरूख’ बदहवास दुनिया की सच्चे अर्थों में पड़ताल करती है और चुनती है अपने लिए उस सत्य को, जो उसे अकेला तो कर देता है, पर आत्मविश्वास के साथ खड़ा होना सिखाया देता है।

‘बहसीते जहरा’ उपन्यास नासिरा शर्मा का पहला उपन्यास है जो सन् 1984 को प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में ईरानी क्रांती को आधार बनाया गया है, इस उपन्यास का दूसरा नाम ‘सात नजरों एक समन्दर’ है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र सात सहेलियाँ हैं। सूसन, मलिहा, परी महनाज, तत्या, ननोवर, अखतर इन्हीं स्त्रियाँ के आस-पास कथावस्तु पुस्तिया रहती है। नारी का यह देश प्रेम और जान देने का साहस एक पुरुषों को समझें है कि नारी किसी से कमजोर नहीं है।

‘पाररजात’ उपन्यास में नासिरा शर्मा का यथार्थ से युक्त मानव स्वभाव और मानसिक परेशानियों से घिरे दो व्यक्ति रोहन और रूही की कहानी है। रूही उपन्यास की सबसे प्रभावशाली चरित्र है। उपन्यास की कथावस्तु में इलहास कहीं फिरदार बनकर उभरता है तो कहीं वर्तमान और अतीत के बीच सुनन्दार की भूमिका निभाता नजर आता है।

पारिजात केवल एक लृक्ष कथा और विश्वास मात्र नहीं है, बल्कि यथार्थ की धरती पर लिख गई एक ऐसी तमन्ना है, जो रोहन के खुन में रेशा-रेशा बनकर उतरी है और रूही के श्वासों में ख्याल बनकर धुल गई है उपन्यास में ‘पारिजात’ एक रूपक नहीं दरअसल नए पुराने रिश्तों की दास्तान है।

कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा का सभी उपन्यासों में सृजनात्मकता का निचोड़ है, जिसमें उनके विचार, भाषा, संवेदना और नारी विमर्श का उच्च समीक्षा दृष्टि का पता चलता है।

संदर्भ गत्य

नासिरा शर्मा - ‘शाल्मली’
नासिरा शर्मा - ‘ठीकरे की मंगली’
नासिरा शर्मा - ‘पारिजात’